बिहार सरकार

कैथी लिपि

पाठ्य पुस्तिका

भू-अभिलेख एवं परिमाप निदेशालय
शास्त्री नगर, पटना

डॉ० दिलीप कुमार जायसवाल
मंत्री
राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

Dr. Dilip Kumar Jaiswal
Minister
Revenue & Land Reforms Department
Govt. of Bihar
Office :- Main Secretariate, Patna-15
Phone :- 0612-2217355 (O)
Mob. :- 9430911111
Email :- revenueminister.bihar@gmail.com

पत्रांक :.....................   दिनांक :29/11/2024

—: शुभकामना संदेश :—

यह एक हर्ष का विषय है कि वर्तमान समय में राज्य में संचालित बिहार विशेष सर्वेक्षण एवं बन्दोबस्त कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य के रैयतो को अनेक विगत भू–दस्तावेजो के कैथी लिपि में होने के कारण आ रही कठिनाईयों को देखते हुए **''कैथी लिपि पाठ्य पुस्तिका''** का प्रकाशन किया जा रहा है।

समग्र रूप से रैयतो के लिए उपयोगी इस पुस्तिका के प्रकाशन के लिए भू–अभिलेख एवं परिमाप निदेशालय निश्चित रूप से धन्यवाद का पात्र है।

(डॉ० दिलीप कुमार जायसवाल)

प्राक्कथन

राज्य में समस्त भूमि के प्रत्येक भू–खण्ड का रैयतवार स्वामित्व निर्धारण सुनिश्चित करना राज्य सरकार का दायित्व है। वर्त्तमान स्थिति के अनुकूल स्वामित्व निर्धारण की इस प्रक्रिया में विगत भू–सर्वेक्षण के अधिकार अभिलेख एवं रैयतों के पास उपलब्ध लम्बी अवधि पूर्व के भू–दस्तावेज एक साक्ष्य के रूप में आवश्यक होते हैं। राज्य में अनेक जिलों एवं ग्रामों के उपलब्ध खतियान एवं भू–दस्तावेज कैथी लिपि में लिखित हैं। वर्त्तमान समय में कैथी लिपि सामान्य जन–जीवन एवं भू–दस्तावेजों से विलुप्त हो गई है और इसी कारण इस लिपि को जानने एवं समझने वालों की संख्या भी अत्यंत सीमित हो गई है। वर्त्तमान समय में राज्य सरकार द्वारा लिए गए निर्णय के आलोक में समस्त राज्य में बिहार विशेष सर्वेक्षण एवं बन्दोबस्त कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। इस कार्यक्रम की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि कैथी लिपि में लिखित अनेक जिलों के खतियान एवं भू–दस्तावेजों के अनुरूप स्वामित्व निर्धारण की प्रक्रिया पूर्ण की जाए। कैथी लिपि से वर्त्तमान समय के रैयतों और विशेष सर्वेक्षण में संलग्न कर्मियों के अनभिज्ञ रहने के कारण आनेवाली समस्याओं के निराकरण के लिए भू–अभिलेख एवं परिमाप निदेशालय द्वारा "**कैथी लिपि–पाठ्यपुस्तिका**" का प्रकाशन किया जाना एक सार्थक पहल है। इस पुस्तिका के प्रकाशन से विशेष सर्वेक्षण एवं बन्दोबस्त कार्य में संलग्न विशेष सर्वेक्षण कर्मियों को कैथी लिपि में लिखित विगत भू–सर्वेक्षणों के खतियान एवं रैयतों द्वारा सर्वेक्षण की प्रक्रिया में कैथी लिपि में उपस्थापित किए जाने वाले भू–दस्तावेजों को समझने एवं उसके आलोक में स्वामित्व निर्धारण को स्पष्ट करने में सहायता मिलेगी।

कैथी लिपि पाठ्यपुस्तिका के प्रकाशन के लिए मैं **भू–अभिलेख एवं परिमाप निदेशालय** एवं इस पाठ्यपुस्तिका के लेखक **श्री प्रीतम कुमार** को धन्यवाद देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि यह पुस्तिका विशेष सर्वेक्षण एवं बन्दोबस्त कार्य में संलग्न कर्मियों एवं राज्य के आम रैयतों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।

(दीपक कुमार सिंह)
अपर मुख्य सचिव
राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग

प्राक्कथन

कई दशक पूर्व बिहार के भू–दस्तवेजों एवं विगत सर्वे खतियान में प्रयुक्त की जाने वाली कैथी लिपि से वर्त्तमान पीढ़ी के रैयत एवं राजस्व प्रशासन में कार्यरत कर्मी लगभग अनिभज्ञ है। वर्त्तमान समय में इस लिपि का प्रयोग सामान्य जनजीवन एवं वर्त्तमान भू–अभिलेखों में बिल्कुल नहीं किए जाने के कारण इस लिपि को पढ़ने एवं समझने वाले की संख्या अत्यंत सीमित होकर रह गई है। इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता है कि भू–सर्वेक्षण एवं भू–स्वामित्व के निर्धारण की प्रक्रिया में विगत सर्वे खतियान एवं पुराने भू–दस्तावेजों की महती भूमिका होती है। वर्त्तमान समय में राज्य में संचालित बिहार विशेष सर्वेक्षण एवं बन्दोबस्त कार्यक्रम में रैयतों के अधिकार अभिलेख के निर्माण की प्रक्रिया में भू–खण्डों के स्वामित्व निर्धारण की कार्रवाई में विगत खतियान के अनुरूप स्वामित्व की स्थिति को स्पष्ट किया जाना इस भू–सर्वेक्षण प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रम है। भू–सर्वेक्षण के इस प्रक्रम में विगत् सर्वे खतियान के कैथी लिपि में लिखित होने के कारण सर्वे में संलग्न कर्मियों और आम रैयतों को स्वाभाविक रूप से अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैं। इस परिप्रेक्ष्य में भू–अभिलेख एवं परिमाप निदेशालय द्वारा ''**कैथी लिपि–पाठ्यपुस्तिका**'' का प्रकाशन किया जाना एक सराहनीय कदम है।

मैं **निदेशक, भू–अभिलेख एवं परिमाप, बिहार, पटना** एवं कैथी लिपि–पाठ्यपुस्तिका के लेखक **श्री प्रीतम कुमार** को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने कैथी लिपि को पढ़ने एवं समझने की प्रक्रिया को सरल रूप में समझाने का प्रयास किया गया है। आशा है कि यह पुस्तिका सर्वेक्षण में संलग्न कर्मियों एवं आम जनता के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।

(जय सिंह)
सचिव
राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग

प्रस्तावना

बिहार के अलग–अलग प्रक्षेत्रों यथा–भोजपुर, मगध एवं मिथिला में अलग–अलग तरीके से भू–दस्तावेजों के लेखन में प्रयुक्त होने वाली कैथी लिपि वर्त्तमान समय में सामान्य जन–जीवन एवं भू–दस्तावेजों में विलुप्त प्रायः हो गई है। राज्य में विभिन्न प्रयोजनों यथा–भू–अन्तरणों, भू–सर्वेक्षण (विशेष सर्वेक्षण एवं बन्दोबस्त) इत्यादि की प्रक्रिया में विगत भू–सर्वेक्षण खतियान और विगत भू–दस्तावेज तथा भू–स्वामित्व की स्थिति स्पष्ट करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य साक्ष्य होते हैं। राज्य में उपलब्ध विगत सर्वेक्षण के अनेक भू–दस्तावेजों एवं खतियान के कैथी लिपि में लिखित होने के कारण वर्त्तमान समय में आम रैयतों एवं भू–सर्वेक्षण कार्य में संलग्न कर्मियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कैथी लिपि का आमजनों में प्रचलित नहीं होने के कारण इससे सम्बन्धित विस्तृत जानकारी अथवा इसे पढ़ने से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की पाठ्य सामग्री का वर्त्तमान समय में सर्वथा अभाव है।

कैथी लिपि से सम्बन्धित उपरोक्त परिस्थितिजन्य समस्याओं एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर भू–अभिलेख एवं परिमाप निदेशालय, बिहार, पटना द्वारा राज्य के रैयतों और वर्त्तमान समय में बिहार विशेष सर्वेक्षण एवं बन्दोबस्त कार्यक्रम में संलग्न पदाधिकारियों/कर्मियों को उनके कार्य में होने वाली असुविधा को देखते हुए **"कैथी लिपि–पाठ्यपुस्तिका"** के प्रकाशन का निर्णय लिया गया। निदेशालय द्वारा इस पुस्तिका के लेखन का दायित्व श्री प्रीतम कुमार शोध छात्र, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय को दिया गया। इस दायित्व को पूर्ण करने के पूर्व श्री प्रीतम कुमार द्वारा अपने एक अन्य सहयोगी मो0 वकार अहमद के साथ राज्य के अनेक जिलों यथा–पश्चिमी चम्पारण, दरभंगा, समस्तीपुर, सारण इत्यादि के बन्दोबस्त कार्यालयों में पदस्थापित विशेष सर्वेक्षण कर्मियों को कैथी लिपि से सम्बन्धित प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।

आशा है कि श्री प्रीतम कुमार द्वारा लिखित कैथी लिपि–पाठ्यपुस्तिका के प्रकाशन से राज्य के विशेष सर्वेक्षण एवं बन्दोबस्त कार्यक्रम में संलग्न विशेष सर्वेक्षण कर्मी एवं राज्य के समस्त रैयत लाभन्वित होंगे। इस जटिल एवं महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए मैं **श्री प्रीतम कुमार** को धन्यवाद देती हूँ।

(जे.प्रियदर्शिनी)
निदेशक
भू–अभिलेख एवं परिमाप

1.1 कैथी लिपि की सामान्य विशेषताएं :

कैथी लिपि एक स्वतन्त्र लिपि के रूप में स्थापित है। इस लिपि का आधिकारिक मान्यता प्राप्त लिपि पंजीयन **ISO15924 kthi(317)** है। जबकि यूनिकोड रेंज **U+11080–U+110CF** निर्धारित है। कैथी लिपि के संबंध में महामहोपाध्याय पंडित गौरी शंकर हीराचन्द ओझा ने कहा है कि यह लिपि मुख्यतः नागरी का किंचित परिवर्तित रूप है। आगे उन्होंने लिखा है कि जिस प्रकार मैथिल लिपि का संबंध बांग्ला लिपि से है उसी प्रकार कैथी का संबंध नागरी से। परंतु लिपिशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो कैथी, मिथिलाक्षर, बांग्ला व नागरी ये चार स्वतंत्र व समृद्ध लिपियाँ हैं। हालांकि मिथिलाक्षर, बांग्ला के साथ व कैथी, नागरी लिपि के साथ साम्यता जरूर रखती है पर इसमें बहुत सी भिन्नताएं भी हैं।

जैसे :

- कैथी लिपि की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसके अक्षरों का शिरोरेखा रहित होना है। जब कैथी अक्षरों को एक समतल, सपाट कागज या अन्य सतह पर उत्कीर्ण किया जाता है तो इसे लंबी क्षैतिज रेखाओं के मध्य रखा जाता है ताकि पंक्ति सीधी हो साथ ही अक्षर भी स्पष्ट दिखाई दे। इस सीधी क्षैतिज समानांतर रेखा को शिरोरेखा के रूप में कतई नहीं देखा जाना चाहिए।

- कैथी लिपि में 35 व्यंजन वर्ण, 10 स्वतंत्र स्वर वर्ण, 9 स्वतंत्र स्वर मात्राएं व अंक में 0–9 निर्धारित है। इसके अतिरिक्त इसमें भी विराम चिन्ह, हलंत, विसर्ग, अनुस्वार, चंद्रबिंदु आदि चिन्हों का प्रयोग किया जाता है।
- कैथी लिपि के लगभग 13–15 वर्ण नागरी लिपि से भिन्न हैं जिसमें **अ** , **आ**, **ओ**, **औ**, **ख**, **च**, **झ**, **ण**, **ड**, **ध**, **फ**, **र**, **ल** आदि का उल्लेख किया जा सकता है।
- कैथी लिपि प्रायः जनसामान्य पढ़े–लिखे लोगों के द्वारा प्रयोग में लाया जाता रहा है साथ ही यह एक अनौपचारिक व्यक्तिक संवाद लेखन में भी बहुतायत प्रयुक्त हुआ है।
- कैथी लिपि के साथ **इ–ई** मात्रा, **उ–ऊ** मात्रा, **ए–ऐ** मात्रा, **व–ब**, **य–ज**, **ये–ऐ** आदि अक्षरों के प्रयोग में फेरबदल होते देखा जा सकता है। कैथी लिपि के अक्षरों में इस प्रकार का परिर्वतन यहां प्रयुक्त होने वाली स्थानीय भाषाई प्रभाव या अभिव्यक्ति को हुबहु लिखने की कोशिश के रूप में समझा जा सकता है।
- कैथी लिपि में **ऋ, ऌ, श्र, क्ष, ज्ञ** का प्रायः प्रयोग नहीं होता।
- कैथी लिपि में संयुक्ताक्षर लिखने का विधान बहुत कम है। पर जब संयुक्ताक्षर लिखा जाता है तो पद्धति देवनागरी लिपि के साथ प्रयुक्त होने वाले संयुक्ताक्षर की भांति ही होगी।

- **ऋ, लृ, श्र, क्ष, ज्ञ** व **संयुक्ताक्षर** का प्रयोग न होने के कारण कैथी लिपि संस्कृत भाषा व उसके साहित्य के लिए उपर्युक्त नहीं है। यानी प्रायः कैथी लिपि में संस्कृत की रचनाएं नहीं लिखी गई।
- कैथी लिपि की भाषाएं इन क्षेत्रों में प्रचलित लोक भाषाएं जैसे भोजपुरी, अवधी, मगही, अंगिका, बज्जिका, सुरजापूरी, बंग्ला, मैथिली आदि है। कालान्तर में उर्दू और हिंदी के लिए भी कैथी लिपि का प्रयोग होने लगा।

1.2 कैथी लिपि के विविध प्रकार

- कैथी लिपि का प्रयोग वृहत क्षेत्रों तक होने के कारण इसमें विविध क्षेत्रीय शैलियों भी विकसित हुई । जो मुख्यत: तीन; तिरहुत क्षेत्र की, भोजपुर क्षेत्र की व मगध क्षेत्र की कैथी है। वर्तमान में कैथी का कंप्यूटर फोंट तैयार किया गया है जो एक अन्य प्रकार वर्तमान कैथी लिपि के रूप में जाना जाता है।
- प्राचीन मिथिला या आज का दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सहरसा आदि क्षेत्रों में कैथी लिपि की एक अलग स्वरूप दिखाई देती है। जिसे मिथिला क्षेत्र की कैथी लिपि कहा जाता है।

- कैथी लिपि के विविधताओं में यह ध्यान देना आवश्यक है कि इसका कोई भी प्रकार या शैली नया–पुराना जैसा नहीं है। सभी का प्रयोग निर्धारित क्षेत्रों में निरंतर रूप में लाया जाता रहा होगा। हालांकि इन प्रकारों में से मूल कैथी लिपि के अक्षर व किसी न किसी परिवर्तन के साथ बने अक्षरों की पहचान जरूर एक अलग व रोचक अध्ययन हो सकता है। पर फिलहाल हमें बस इतना समझना चाहिए कि मिथिला क्षेत्र से लेकर अन्य क्षेत्रों या कंप्यूटराइज कैथी फ़ॉन्ट भी कैथी के पांडुलिपियों में लंबे समय से प्रचलन में रहे हैं।
- एक अन्य महत्वपूर्ण यह कि जब हम जमीन से जुड़ी कैथी लिपि में लिखे रिकॉर्ड की चर्चा करें तो प्रायः कैथी लिपि से अलग–अलग कैथी लिपि के प्रचलित प्रकार प्रयोग में न आ मिश्रित स्वरूप प्रयुक्त होती दिखाई देती है। इसके भी अपने मूल कारण रहे होगें।

1.2.1 तिरहुत क्षेत्र की कैथी लिपि

अ	आ	इ/ ई	ई	उ	ऊ

ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

क	ख	ग	घ	ङ

च	छ	ज	झ	ञ

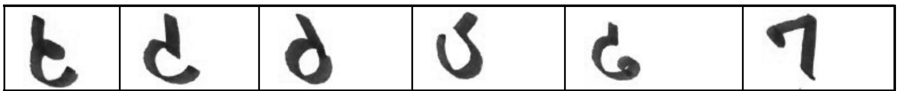

ट	ट	ठ	ड	ढ	ण

त	थ	द	ध	न

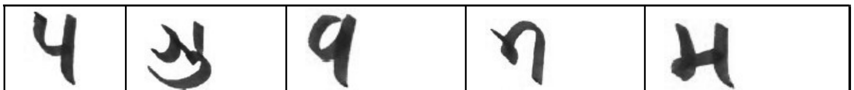

प	फ	ब	भ	म

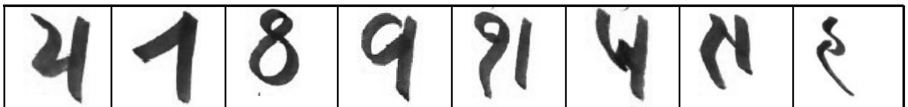

य	र	ल	व	श	ष	स	ह

1.2.2 भोजपुर क्षेत्र की कैथी शैली

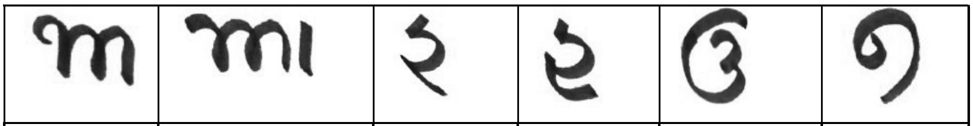

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ

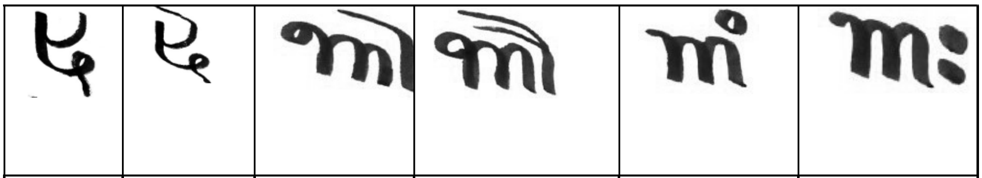

ए	ऐ	ओ	औ	अं	अ:

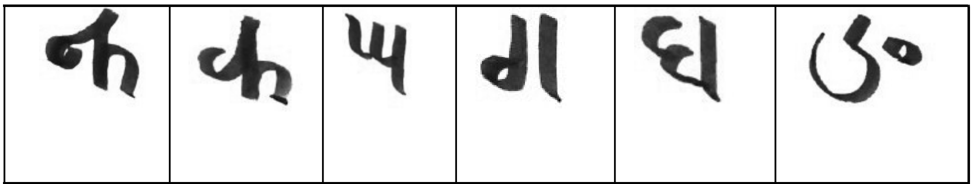

क	क	ख	ग	घ	ङ

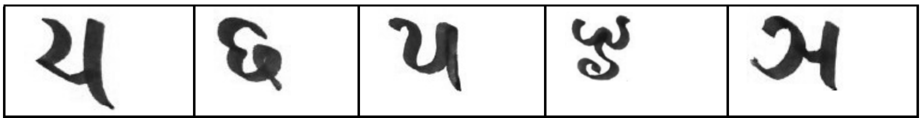

च	छ	ज	झ	ञ

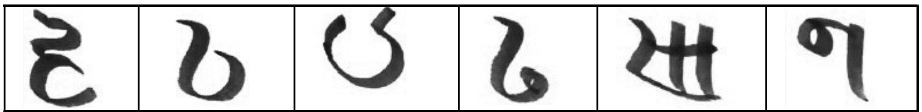

ट	ठ	ड	ढ	ण	ण/न

त	थ	द	ध	न

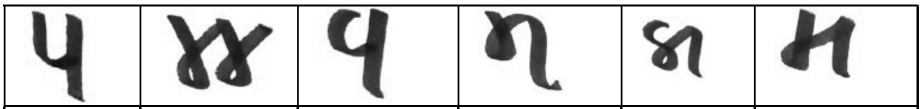

प	फ	ब	भ	म	म

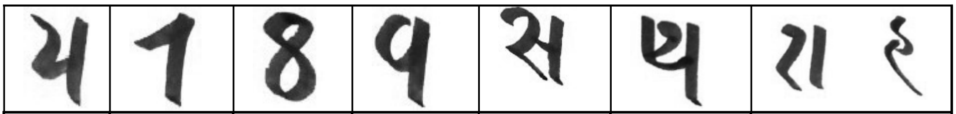

य	र	ल	व	श	ष	स ह

1.2.3 मगध क्षेत्र की कैथी लिपि

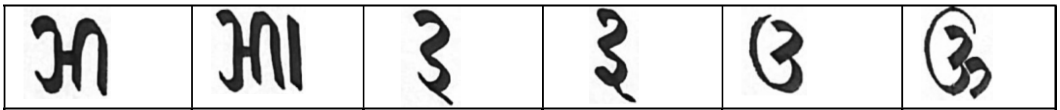

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ

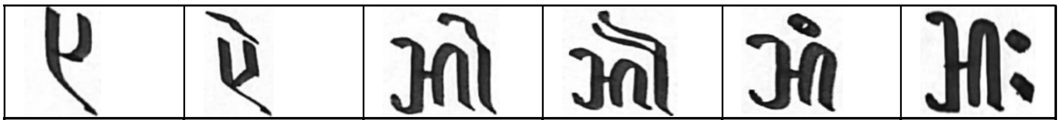

ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

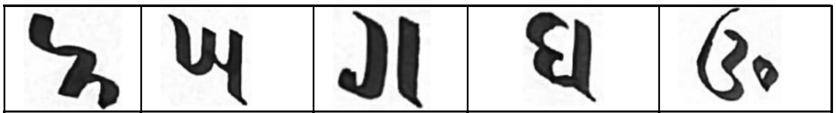

क	ख	ग	घ	ङ

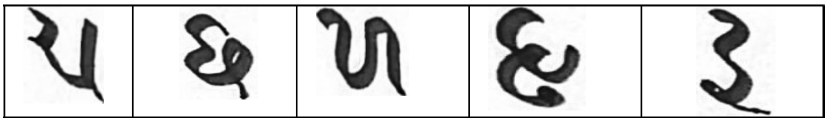

च	छ	ज	झ	ञ

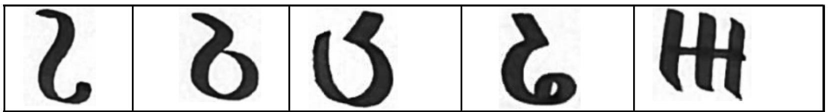

ट	ठ	ड	ढ	ण

		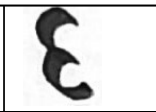	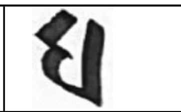	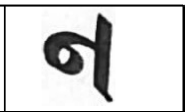
त	थ	द	ध	न

			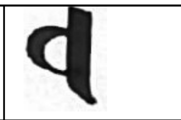	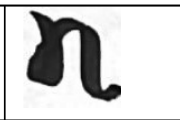	
प	फ	फ	ब	भ	म

					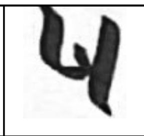	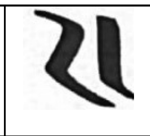	
य	र	ल	व	श	ष	स	ह

1.2.4 कम्प्यूटर में प्रयुक्त कैथी लिपि

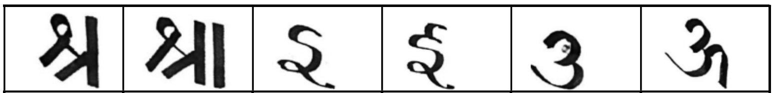

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ

ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

क	ख	ग	घ	ङ

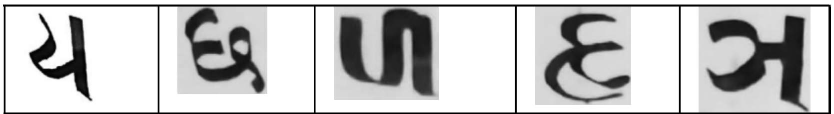

च	छ	ज	झ	ञ

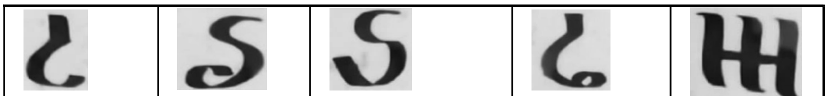

ट	ठ	ड	ढ	ण

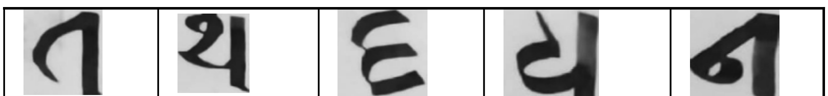

त	थ	द	ध	न

प	फ	ब	भ	म

य	र	ल	व	श

ष	स	ह

1.2.5 मिथिला क्षेत्र की कैथी लिपि

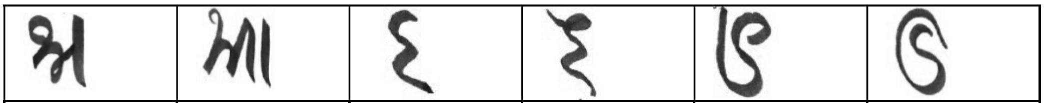

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ

ए	ऐ	ओ	औ	अं	अ:

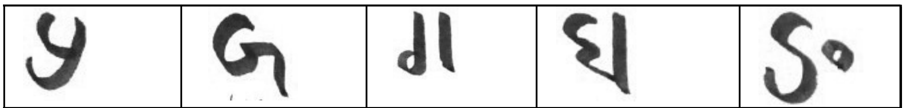

क	ख	ग	घ	ङ

च	छ	ज	झ	ञ

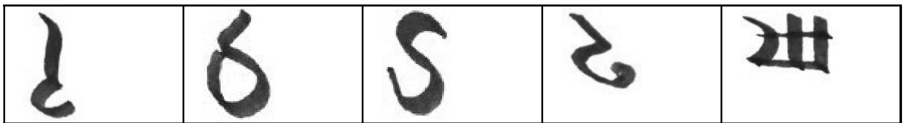

ट	ठ	ड	ढ	ण

त	थ	द	ध	न

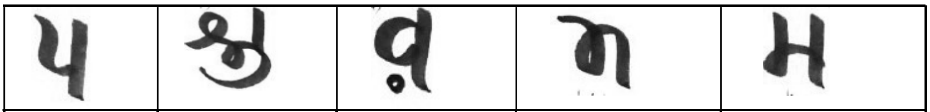

प	फ	ब	भ	म

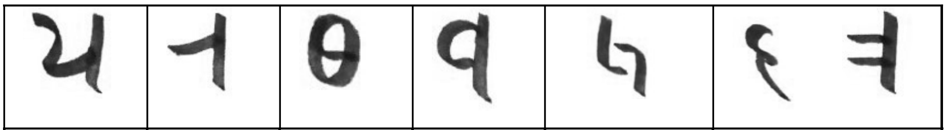

य	र	ल	व	श,ष,स	ह त्र

1.2.6 कैथी लिपि के अन्य अक्षर प्रकार

जो पूर्व के शैलियों से महज लिखने की सहज प्रक्रिया में बदलाव के कारण अलग दिखाई देते हैं। ये निम्न हैं :

		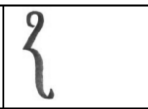	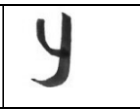	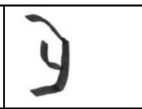		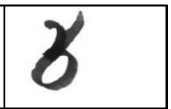
अ	इ ,ई	ए	ए	ऐ	क	क
क	त	त	द	द	ध	ध
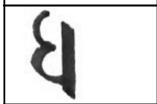					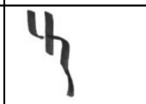	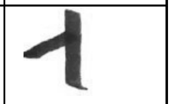
ध	न	न	फ	फ	फ	र
ल	ल	ल	श	स		

1.3 मात्राओं का प्रयोग

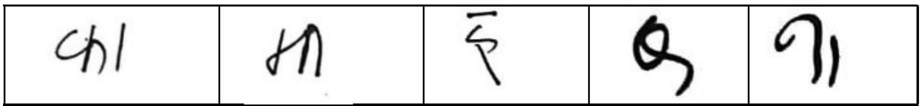

का	मा	हा	ला	ना

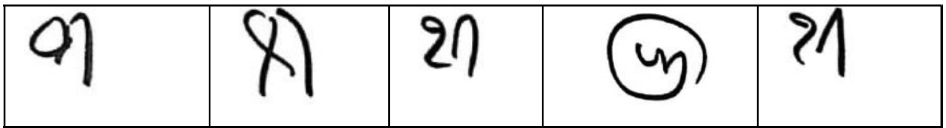

वी/ बी	की	शी	कि	शी

दु	मु	भु	जु	हु

जे	तो	गौ	कै	शो

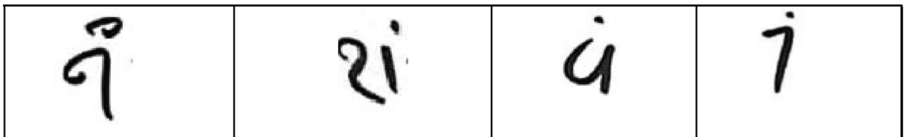

नं	शं	वं / बं	रं

1.4 दो अक्षरों से बने शब्द

1.4.1 लिखने और पढ़ने हेतु अभ्यास :

धर घर नीज भीठ

जीला हीसा/ हिस्सा मार पीट

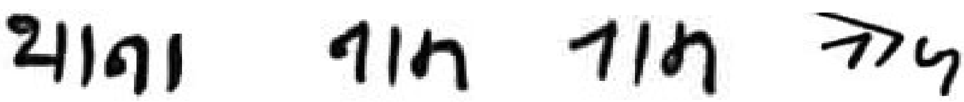

थाना नाम राम रोज

माह लिपि वाणी भाव

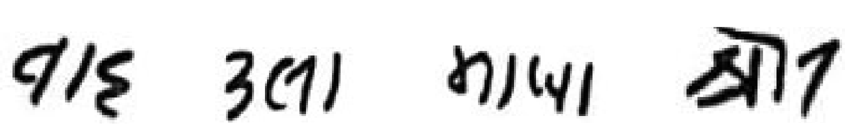

वाद/बाद कला भाषा ओर

फल

जात

बाबु

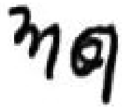

अली

जज

शेख

गया/ गआ

सदा

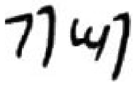

रीखी/ ऋषि

व्रत

चक्र

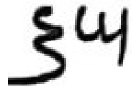

दुख

सीरी या श्री

मंत्र

सीरी या श्री

1.5 तीन अक्षरों से बनने वाले शब्द

1.5.1 लिखने और पढ़ने हेतु अभ्यास :

संपन बहुत रछआ/ गरूड़

तवन कीसन रास्ता मुदई

वल्द सदर अलेह ऐलाके

नोकरी आदर रुपैआ टारन

नयन भोजन अपन मोहन

वास्ते लेखन कारण रिश्तो

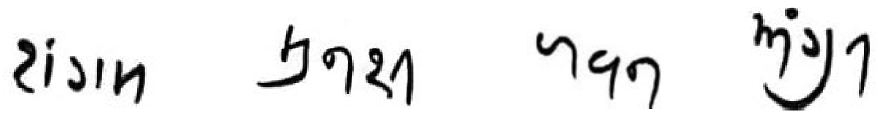

संगम मुंशी जवन अंगुर

हमरे आदीमी बेटवा खेतवा

1.6 जमीन संबंधित दस्तावेजों में उल्लेखित

1.6.1 नाम

1. 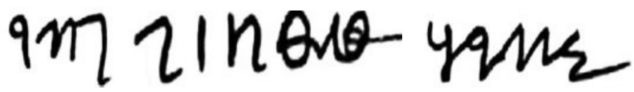

सीरी रामलाल प्रसाद

2. 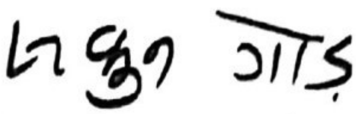

सकुन गौड़

3.

गजाधर प्रसाद

4. 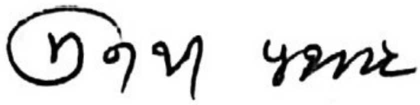

मुनशी प्रसाद

5.

रामशरन प्रसाद

6. 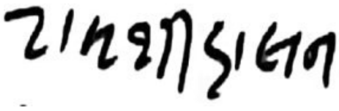

रामसिहासन

7. 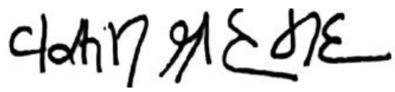

वकार अहमद

8. 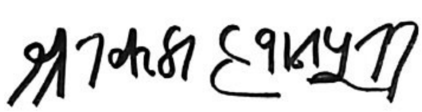

अकरम हसनपुरी

9.

शाकीब अहमद

10. 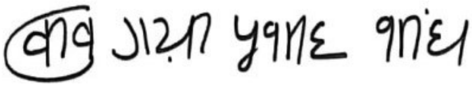

बाबु गया प्रसाद सींघ

11. 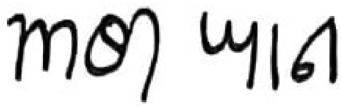

अली खान

12. 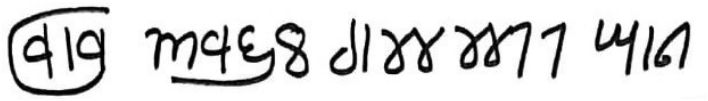

बाबु अब्दुल गफ्फार खान

13.

शेख मोहम्मद शमी

14. 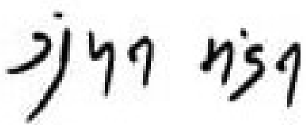

गुंजन मंडन

15. 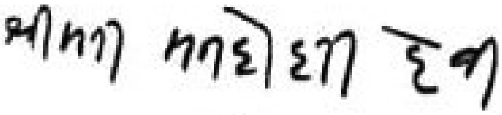

श्रीमती मनदोदरी देवी

16.

भीखारी मंडन

17. 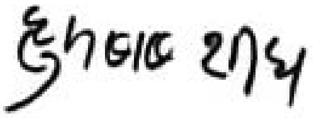

झुमलाल शीघ

18. 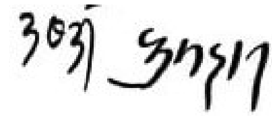

कल्की कुमहार

19. 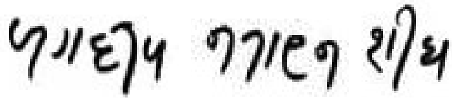

जगदीप नराएन शीघ

20. 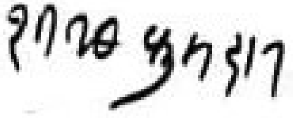

शीतल कुमहार

21. 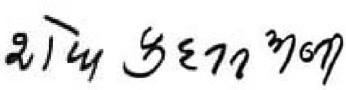

शेख कुदरत अली

22.

कीरीशन वलभ प्रसाद नाराएन सींघ

23. 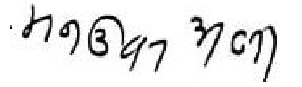

मनउवर अली

24. 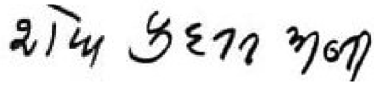

शेख कुदरत अली

25. 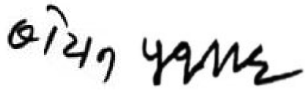

लोचन प्रसाद

1.6.2 स्थान नाम

1.

कोपा सारण छपरा

2. 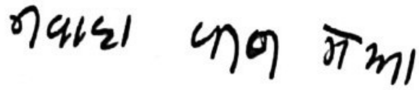

नवादा जीला गेआ / गया

3. 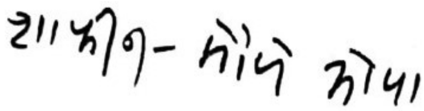

शाकीन मौजे कोपा

4. 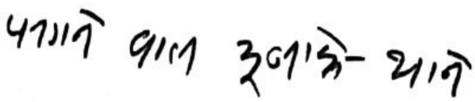

परगने वाल इलाके थाने

5. 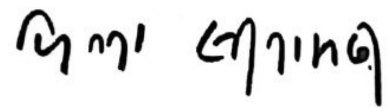

जिला सीतामढ़ी

6. 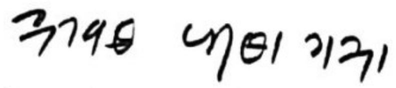

अरवल जीला गया

7. 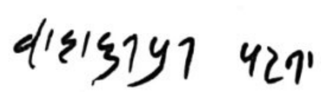

बाहादुरपुर पटना

8. 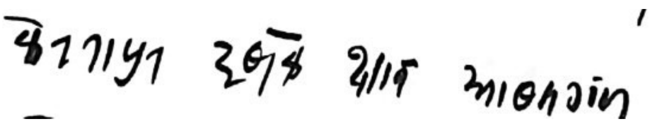

केरतापुर इलाके थाना आलमगंज

9. 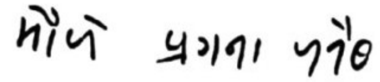

मौजे प्रगना जरैल

10. 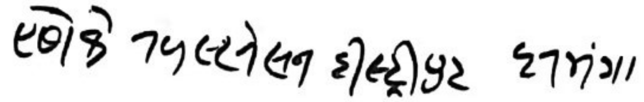

ऐलाके रजस्टरेसन डीस्ट्रीक्ट दरभंगा

11. 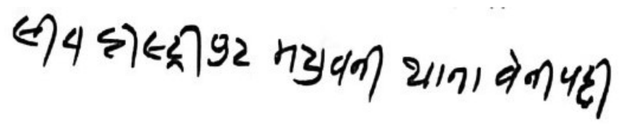

सीव डीस्ट्रीक्ट मधुबनी थाना बेनीपट्टी

12. 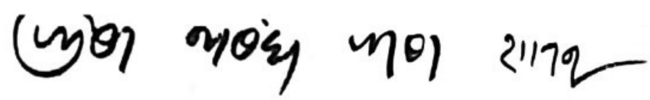

जिला नालंदा जीला सारन

1.6.3 जाति व पेशा से संबंधित शब्दावली

जात कुरमी जात हाजाम सेख

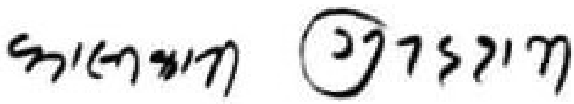

कास्तकारी गिरहशती

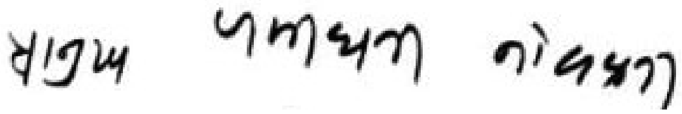

धानुख जमीदारी नोवकरी

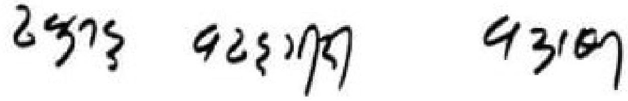

ठकुरइ बटईगीरी वकालत

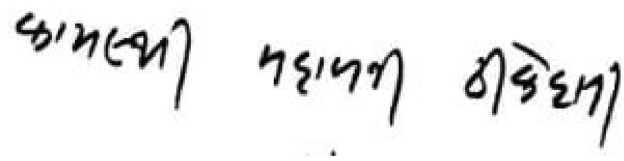

कायस्थी महाजनी ठीकेदारी

पठान महतो कोइरी

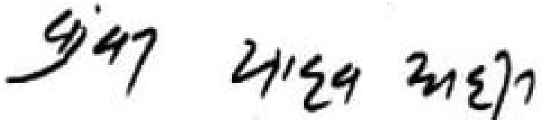

कुंवर यादव अहीर

चाइ भंगी मुसहर

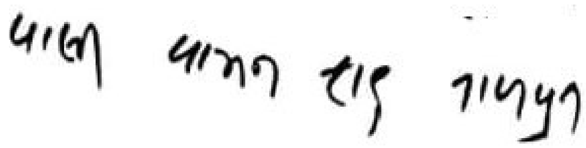

पासी बाभन राए राजपुत

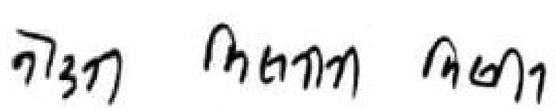

नौकरी मिसतीरी मिसीर

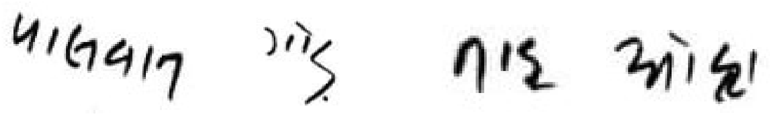

पासवान गोंड नाइ ओझा

कुरैसी धुनीया साहु

प्लेट I

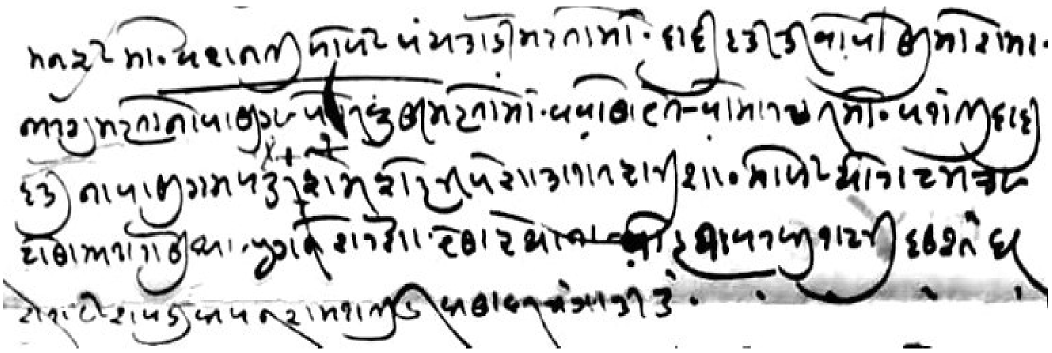

अनुवाद

मनके मो. वसनती जौजे पंचकौड़ी महतो मो. दादी हकीकी वो बोली मोसामा नीरसु महतो नाबालिग पेसर कुली महतो मा व वोलाऐत मोसमात वसंती दादी नाबालीग कौम - कोइरी, पेशा - कास्तकारी, शा. मौजे - चोरा टभका टोला मिश्रौलिआ प्रगने सरैसा ऐलाके थाना व सब रजीशटरी दलसींघ सराऐ सव डीवीजन समस्तीपुर जीला दरभंगा।

प्लेट II

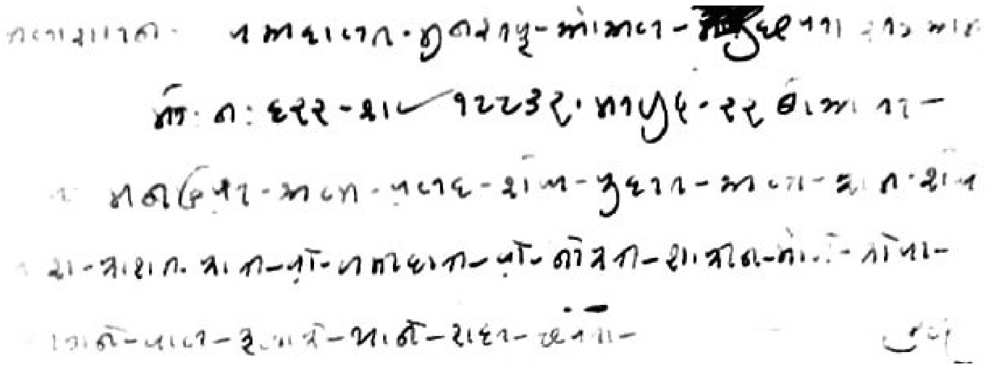

अनुवाद

जीला सारण   ब अदालत मुनसीफ औव्व्ल मुकाम छपरा

मो. न. 622 स. 1883 ई मरजुद 22 लोअर

मनउवर अली वल्द शेख कुदरत अली कौम शेख पेशा कास्त कारी वो जमीदारी वो नौकरी शाकीन मौजे कोपा प्रगने बाल इलाके थाने सदर छपरा।

प्लेट III

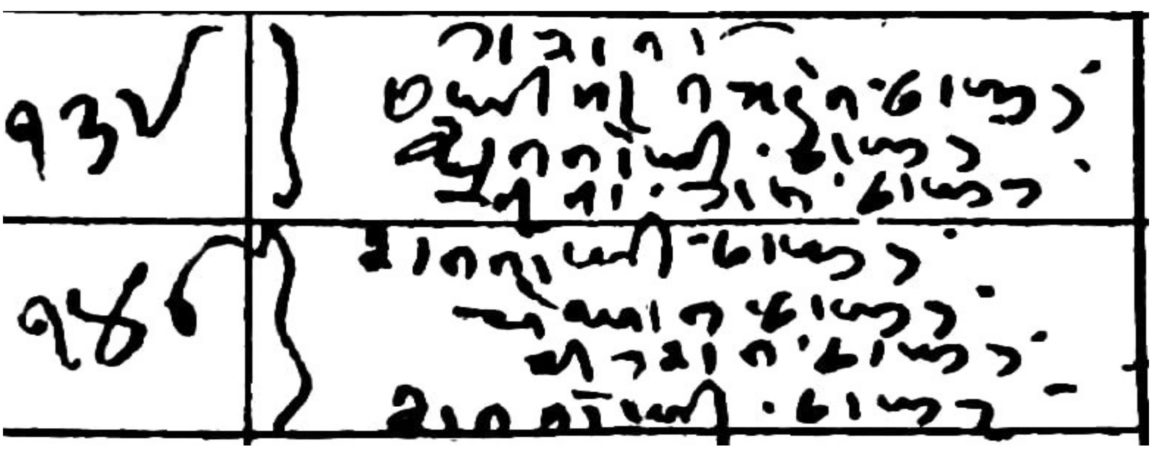

अनुवाद

139	रासता लछीमी चंदर ठाकुर सतरौखी ठाकुर सुरागम ठाकुर
147	सतरौखी ठाकुर चेथार ठाकुर जरसन ठाकुर सतरौखी ठाकुर

प्लेट IV

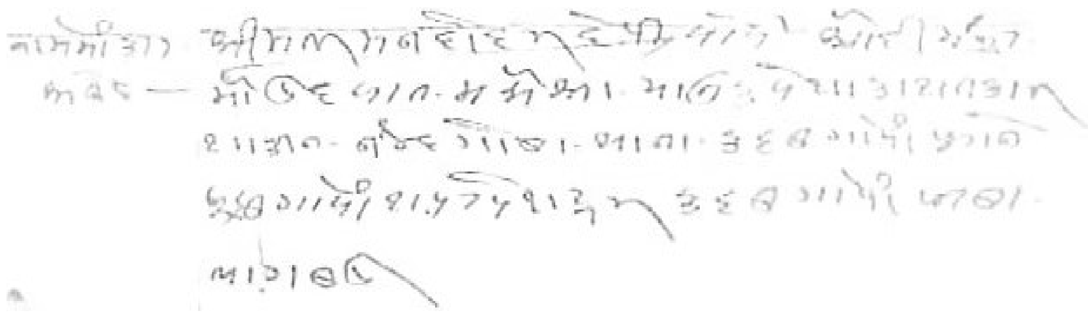

अनुवाद

नाममोकीर श्रीमती मनदोदरी देवी जौजे फ़ौदी मंडल

अलेह मौजुद जात मघैआ धानुक पेशा कास्तकारी
शाकीन नन्दगोला थाना कहलगांवो प्रगने
कहलगांवो शब रजेशट्ररी कहलगांवो जीला
भागालपूर

प्लेट V

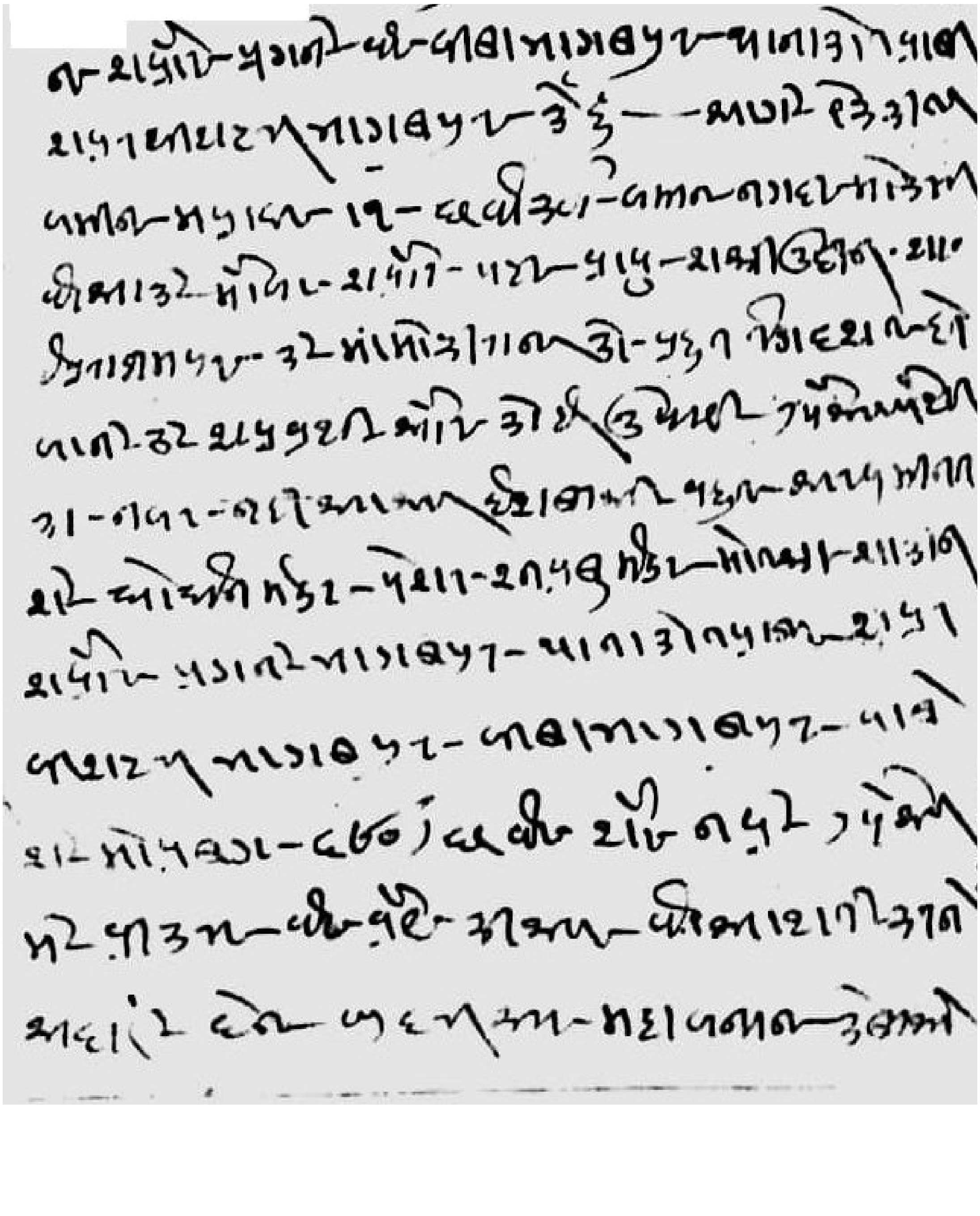

अनुवाद

न शबौर प्रगने वो जीला भागलपुर थाना कोतवाली
सव रजीसटरी भागलपुर के हूं। आगे एक कीता
जमीन मवाजी छवो कठा जमीन नगदी मोकमी
वो आके मौजा शबौर पटी बाबु शफीउद्दीन शा.
इबराहीमपुर के मामोकीरान को बहुत तेज दस्त हो
जाने के शब बुशी और कोई उपाए रुपैआ पैसा
का नजर नहीं आया इसीलिआ बहुत आरज मीनत
से घोघन मंडर पेसर सीवलु मंडर मोतफा शाकीन
सबौर प्रगने भागलपुर थाना कोतवाली सव र
जीसटरी भागलपुर जीला भागलपुर वाले
से मोवलग छवो सौ नबे रुपैआ
में बिकरी बो वऐ कीआ वाआशते करने
अदाए देन खुदरीया महाजनान के लिआ

प्लेट VI

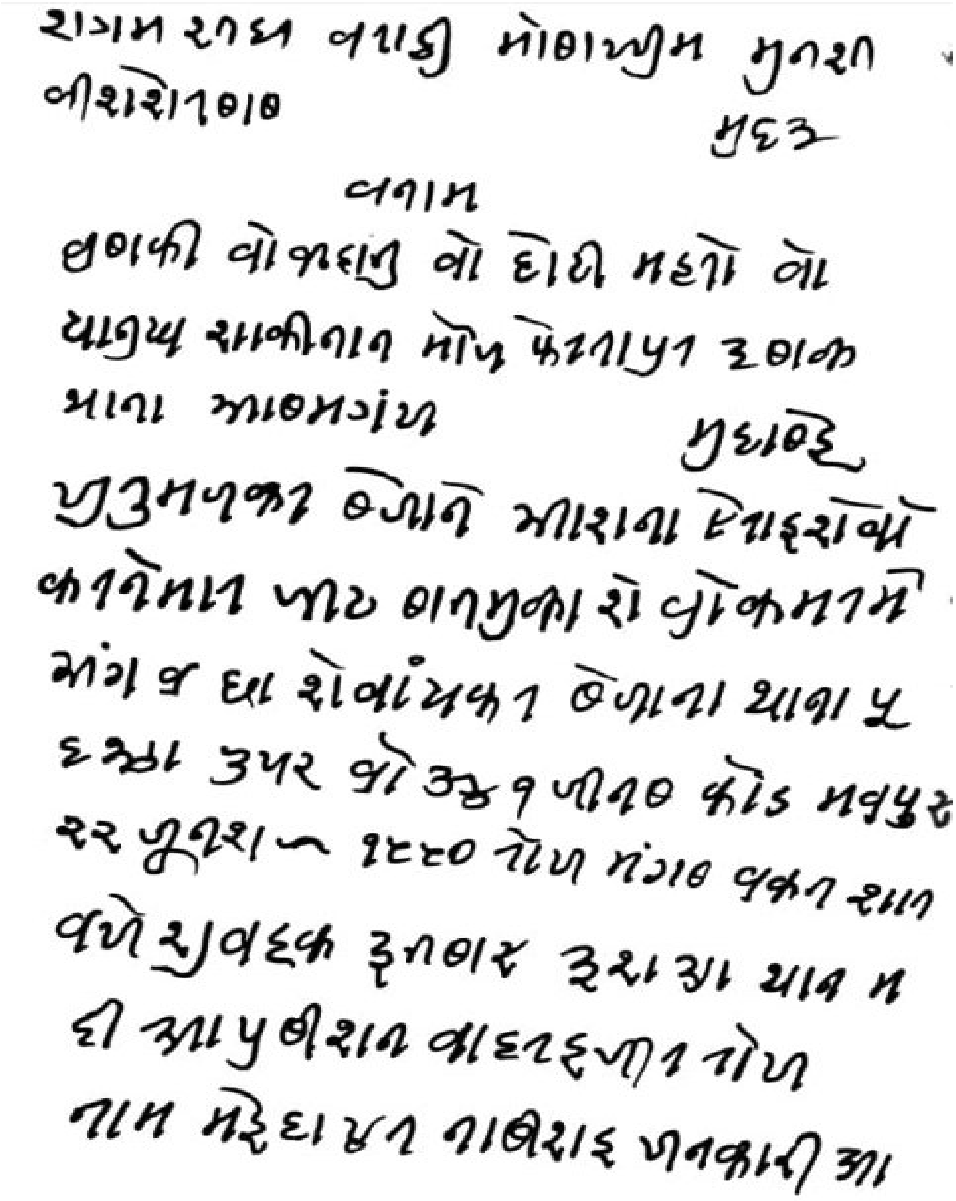

अनुवाद

संगम सींघ बराही मोलजीम मुनशी

बीशेशरलाल मुदइ

बनाम

बुलाकी वो बिहारू वो छोटी महतो वो

धानुख शाकीनान मोज केरतापुर इलाक

थाना आलमगंज मुदालई

जुरूम जकर ले जाने आशना ऐराइशे वो

करने मार पीट लात मुका शे वो कमर में

अंगवछा से बंधाकर ले जाना थाना पु

दउठा उपर वो 341 पीनल कोड मवपुर

22 जून स. 1880 रोज मंगल वक़्त सात

बजे सुबहक इतलाए इसआ थान म

ही आपलीशन बाहर हाजीर रोज

नाम मईदाहर नालीशइ जानकारी आ।